

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य, सत्र 2, परिचय, भाग 2, धर्मशास्त्रीय विधि, प्रमुख पुस्तकें, बाइबिल ध्वनि, यशायाह 53

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मसीह के उद्धार कार्य पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह सत्र संख्या दो, परिचय, भाग दो, धर्मशास्त्रीय विधि, मुख्य पुस्तकें, बाइबिल की ध्वनियाँ, यशायाह 53 है।

हम अब अपना ध्यान धर्मशास्त्रीय विधि की ओर मोड़कर मसीह के उद्धार कार्य पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

हमने बाइबिल की कहानी और उद्धार की योजना, पूर्ति, प्रयोग और पूर्णता के बारे में सोचा है। धर्मशास्त्रीय पद्धति, यह सोचना अच्छा है कि हम शास्त्रों का अध्ययन उनकी शिक्षाओं को समझने के लिए कैसे करते हैं। 2 तीमुथियुस 3 में प्रसिद्ध प्रेरणा मार्ग कहता है कि सभी शास्त्र ईश्वर से प्रेरित हैं, और यह शिक्षा, फटकार, सुधार और धार्मिकता में निर्देश के लिए लाभदायक है।

मैं इसे बाइबिल की शिक्षाओं या सिद्धांतों को समझने के लिए बाइबिल का अध्ययन करने के लिए एक बाइबिल वारंट के रूप में लेता हूँ, और यह सोचना अच्छा है कि हम जो करते हैं वह क्यों करते हैं। मुझे लगता है कि धर्मशास्त्रीय पद्धति में व्याख्या, बाइबिल धर्मशास्त्र और ऐतिहासिक धर्मशास्त्र शामिल हैं, जो सभी व्यवस्थित धर्मशास्त्र के लक्ष्य की ओर ले जाते हैं और यहां तक कि विभिन्न व्यावहारिक धर्मशास्त्रीय विषयों में इसके फल भी मिलते हैं। धर्मशास्त्रीय पद्धति व्याख्या से शुरू होती है।

सभी अच्छे धर्मशास्त्र की नींव बाइबिल के अंशों के अर्थ को समझना है, जो पाठ के माध्यम से बाइबिल के लेखक के इरादे से शुरू होता है। किसी अंश का अध्ययन करते समय, हमें एक विशेष साहित्यिक शैली, कथा, कहावत, दृष्टांत, सुसमाचार, पत्र, आदि पर ध्यान देना चाहिए और शैली के लिए उपयुक्त साहित्यिक रणनीतियों पर विचार करना चाहिए। साहित्यिक संदर्भ भी महत्वपूर्ण है क्योंकि किसी भी दिए गए अंश का स्थान हमें यह समझने में सहायता करता है कि बाइबिल के लेखक का क्या मतलब है।

किसी शब्द का अर्थ अक्सर उसके आस-पास के वाक्यांशों, खंडों और वाक्यों में अध्ययन करने से उभरता है। वाक्य का अर्थ उसके पैराग्राफ या दृश्यों में दिखाई देता है, और दृश्य का अर्थ आस-पास के एपिसोड, अनुभागों या समग्र पुस्तक में उभरता है। ऐतिहासिक सेटिंग भी रचनात्मक होती है क्योंकि पाठ के अवसर, प्राप्तकर्ता, लेखक और चर्च के संदर्भ को जानना अच्छी व्याख्या को बढ़ावा देता है।

धर्मशास्त्रीय पद्धति का आधार व्याख्या है। मैं न केवल उदार स्कूलों में बल्कि उन लोगों में भी बाइबिल की भाषाओं के शिक्षण में कमी पर शोक व्यक्त करता हूँ जो कहते हैं कि वे बाइबिल की मौखिक प्रेरणा में विश्वास करते हैं। मुझे डर है कि लूथर सही थे।

यदि हम बाइबिल की भाषाओं को नहीं पकड़ते हैं, तो हम अंततः सुसमाचार को खो देंगे। बाइबिल धर्मशास्त्र अंततः, प्रत्येक बाइबिल मार्ग का संदर्भ न केवल उसकी विशेष पुस्तक है, बल्कि संपूर्ण केनन भी है, जो बाइबिल के ग्रंथों को ईश्वर की प्रकट होने वाली योजना में रखता है जो, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, सृष्टि और पतन से मुक्ति और नई सृष्टि की ओर बढ़ता है। यह बाइबिल की कहानी सिद्धांतों को प्रेम करती है, आदेश देती है और जोड़ती है।

इसके अलावा, यह मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में परिणत होता है, जो सुसमाचारों से पहले और बाद में आने वाली चीज़ों को अलग करता है। इसलिए, हमारे लिए यह समझदारी होगी कि हम बाइबिल की कहानी के भीतर अंशों का पता लगाएँ और उन्हें विषय पर अन्य अंशों से भी जोड़ें। हम देखते हैं कि बाइबिल की कहानी पुराने नियम में बाइबिल की वाचाओं, व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं और लेखों के साथ-साथ नए नियम में, सुसमाचारों, प्रेरितों के कामों, पत्रों और प्रकाशितवाक्य में नई वाचा के उदय के माध्यम से कैसे विकसित होती है।

हमारा ध्यान न केवल उन विशिष्ट सिद्धांतों पर होना चाहिए जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं, बल्कि बाइबिल की प्रत्येक पुस्तक के केंद्रीय विषयों और संपूर्ण बाइबिल में केंद्रीय विषयों - वाचा, राज्य, प्रायश्चित, महिमा, प्रेम, पवित्रता, आदि पर भी होना चाहिए। यह हमें अध्ययन किए जा रहे सिद्धांत के इन अन्य प्रमुख विषयों से संबंधों को देखने में सक्षम करेगा, जो हमें मसीह के संबंधों, अनुपात और प्रकाश में शिक्षा को समझने और संश्लेषित करने में सक्षम करेगा। इस प्रकार, अच्छा धर्मशास्त्र बाइबिल की व्याख्या पर आधारित है और बाइबिल धर्मशास्त्र में निहित है।

इसमें ऐतिहासिक धर्मशास्त्र भी शामिल है, हालाँकि अब हम सीधी रेखा में नहीं हैं। बाइबिल धर्मशास्त्र व्याख्या पर आधारित है, और अगर हम इसका आरेख बना रहे होते, तो हम उत्तर से ऐतिहासिक धर्मशास्त्र लाते क्योंकि यह बाइबिल धर्मशास्त्र से उस तरह प्रवाहित नहीं होता जिस तरह बाइबिल धर्मशास्त्र व्याख्या से प्रवाहित होता है। फिर भी, हमारी प्रवृत्ति बाइबिल को व्यक्तिगत रूप से पढ़ने की हो सकती है, इसे निजी तौर पर पढ़ना ताकि ईश्वर के बारे में सीखा जा सके और व्यक्तिगत रूप से उसका बेहतर तरीके से पालन किया जा सके।

जबकि यह मददगार है, हमें व्याख्यात्मक प्रक्रिया में चर्च की केंद्रीयता पर भी विचार करना चाहिए। चर्च पवित्रशास्त्र का ऐतिहासिक व्याख्याकार रहा है। जबकि ऐतिहासिक चर्च की शिक्षाएँ और पंथ विश्वासियों पर उसी तरह अधिकार नहीं रखते हैं जिस तरह अकेले पवित्रशास्त्र है, सुधार के युद्ध के नारों में से एक, स्क्रिचरा का अर्थ है, एक धर्मशास्त्री के रूप में मेरी समझ में, कि हम जानबूझकर और लगातार सब कुछ पवित्रशास्त्र के अधीन करते हैं।

अगर हम इसके बारे में थोड़ा सोचें, तो हम सभी अपने अनुभव, निश्चित रूप से अपने तर्क और मुझे उम्मीद है कि बाइबिल की व्याख्या करते समय कुछ परंपराओं का उपयोग करते हैं, लेकिन सोला स्क्रिप्टुरा, केवल बाइबिल को अंतिम अधिकार के रूप में उपयोग करना, सोला स्क्रिप्टुरा

का अर्थ है जानबूझकर और लगातार हमारे अनुभव, तर्क और परंपरा को पवित्र शास्त्र के अधीन करना। व्याख्याओं के लिए आधुनिक और उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोणों पर केवल शास्त्र ही अधिकार रखता है, जिसने कभी-कभी ऐतिहासिक चर्च शिक्षाओं की कीमत पर व्यक्तिगत व्याख्याकार, आधुनिक या पाठकों के समकालीन समुदायों, उत्तर-आधुनिक को उजागर किया है। हम बाइबल पढ़ने वाले पहले व्यक्ति नहीं हैं, लेकिन हम सदियों से ईश्वर के लोगों की धारा में खड़े हैं और चर्च के इतिहास के प्रमुख विचारकों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

उदाहरण के लिए, अथानासियस, ऑगस्टीन, थॉमस एक्विनास, लूथर, कैल्विन, जॉन ओवेन, जोनाथन एडवर्ड्स, जॉन वेस्ले, आदि। हमें चर्च की ऐतिहासिक विचारधारा से बहुत ही संकोच के साथ अलग होना चाहिए और केवल तभी जब पवित्र शास्त्र या स्पष्ट कारण से पूरी तरह से आश्चर्य हो जाएं। हमें अपने वर्तमान चर्च समुदाय के संदर्भ में भी पवित्र शास्त्र को पढ़ना चाहिए, यह महसूस करते हुए कि पवित्र शास्त्र अन्य विश्वासियों के साथ हमारे जीवन का मार्गदर्शन करता है।

इस प्रकार, अच्छा धर्मशास्त्र चर्च द्वारा, चर्च के साथ और चर्च के लिए, ऐतिहासिक चर्च शिक्षाओं के प्रति सम्मान के साथ और जीवन में एक साथ किया जाता है। व्यवस्थित धर्मशास्त्र, जैसा कि व्याख्या से पता चलता है, हमें बाइबिल धर्मशास्त्र, विशेष रहस्योद्घाटन के इतिहास को समझने में मदद करता है जैसा कि गेरहार्डस वोस ने इसे परिभाषित किया है। और ऐतिहासिक धर्मशास्त्र बाइबिल धर्मशास्त्र से प्रवाहित नहीं होता है जिस तरह से बाइबिल धर्मशास्त्र व्याख्या से प्रवाहित होता है।

फिर भी, यह एक अलग विषय पर आता है क्योंकि हम निश्चित रूप से उन लोगों के गुणों और दोषों से सीखना चाहते हैं जो हमसे पहले गए थे। व्याख्या, बाइबिल धर्मशास्त्र और ऐतिहासिक धर्मशास्त्र में हमारे काम के आधार पर, हम एक धार्मिक संश्लेषण की ओर बढ़ते हैं। हम प्राथमिक बाइबिल विषयों को शामिल करने, केंद्रीय धार्मिक विषयों को संबोधित करने और सिद्धांतों के बीच प्राथमिकताओं और अंतर्संबंधों को दिखाने का प्रयास करते हैं।

इस तरह के धर्मशास्त्र को बाइबिल की कहानी के प्रकाश में सबसे बेहतर तरीके से व्यवस्थित और संप्रेषित किया जाता है। हम अपने धर्मशास्त्र को इस तरह से व्यक्त करना चाहते हैं जो प्रासंगिक, स्पष्ट और दूसरों के लिए फायदेमंद हो। मैं यहाँ व्यावहारिक धर्मशास्त्र, व्याख्या, बाइबिल धर्मशास्त्र, ऐतिहासिक धर्मशास्त्र और व्यवस्थित धर्मशास्त्र जोड़ सकता हूँ, जो अंततः हम इस व्याख्यान श्रृंखला में चाहते हैं।

अंत में, हमारे पास मसीह के उद्धार कार्य का एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र होगा। लेकिन वहाँ पहुँचने में हमें समय और प्रयास लगेगा, और यह दोनों ही बातें शास्त्र की शिक्षा को समझने के लिए सार्थक हैं और, जल्द ही आने वाले एक व्याख्यान में, जिस तरह से चर्च ने सदियों से मसीह के उद्धार कार्य को समझने की कोशिश की है। वास्तव में, मेरा छोटा ग्रिड बहुत सरल है क्योंकि इनमें से कोई भी चीज़ अलग-अलग नहीं की जाती है।

इसका मतलब यह है कि हमारी व्याख्या हमारे व्यवस्थित धर्मशास्त्र से प्रभावित है, और यह मेरे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि सुधारवादी और इंजीलवादी सेमिनरी, जिनके बारे में मैं अब

ऐतिहासिक धर्मशास्त्र के बारे में बात कर रहा हूँ, उनके पास केल्विन, जोनाथन एडवर्ड्स, शायद जॉन ओवेन जैसे लोगों पर पाठ्यक्रम हैं, और आर्मिनियन और इंजीलवादी सेमिनरी में वेस्ले और इसी तरह के अन्य लोगों पर बहुत सारे पाठ्यक्रम हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। सीएस लुईस, हालांकि यह किसी भी सेमिनरी में हो सकता है क्योंकि वह अपने धर्मशास्त्रीय झुकाव के लिए एक महान क्षमाप्रार्थी थे, जो निश्चित रूप से आर्मिनियन थे, मैंने उन्हें इस संबंध में सुधारवादी सेमिनरी की तुलना में आर्मिनियन सेमिनरी के पाठ्यक्रम में अधिक देखा है।

बाइबिल की कहानी और उद्धार के बारे में थोड़ा सोचने के बाद और फिर कम से कम सरसरी तौर पर धर्मशास्त्रीय पद्धति को देखने के बाद, मैं आपके साथ कुछ मुख्य पुस्तकों को संक्षेप में साझा करना चाहूँगा जो मुझे प्रायश्चित के सिद्धांत का अध्ययन करने के 40 वर्षों में सबसे अधिक सहायक लगीं। मेरा शोध प्रबंध, सबसे पहले, मेरी परीक्षाएँ, और सेमिनरी से डॉक्टरेट की पढ़ाई में जाना इस तरह से राहत देने वाला था। लगातार भाषा प्रश्नोत्तरी और सामान के बजाय, पूरे दो साल तक कोई परीक्षा नहीं जिसमें आपने भाषा की परीक्षाएँ दीं, अपने स्वयं के ऐतिहासिक धर्मशास्त्र की डिग्री से आधुनिक फ्रेंच और जर्मन का ज्ञान सीखा, प्रदर्शित किया, पढ़ा, साथ ही ऐसे पाठ्यक्रम जिनमें आपने पेपर लिखे और कक्षा में भाग लिया, लेकिन कोई परीक्षा नहीं, जिसके अंत में आपको ऐसी परीक्षाएँ देनी पड़ीं जो आपने अपने जीवन में पहले कभी नहीं ली थीं।

इन्हें व्यापक परीक्षाएँ कहा जाता है। न्यू जर्सी के मैडिसन में डू यूनिवर्सिटी के ग्रेजुएट स्कूल में मेरे डिग्री प्रोग्राम, पीएचडी में, दो सप्ताह में चार परीक्षाएँ होती थीं, इसलिए आप एक पहले दिन, एक आखिरी दिन, एक यहाँ, एक यहाँ रखते हैं, और आप बीच में सोने और खाने की कोशिश करते हैं और अपने दोस्तों के साथ बहुत ज़्यादा चिड़चिड़े नहीं होते। मेरा काल पैट्रिस्टिक काल था, चर्च के पिता, मध्ययुगीन काल से पहले।

हमें अपने काल से बाहर के दो लोगों को चुनना था। मैंने एमिल ब्रूनर को चुना, जो एक नव-रूढ़िवादी धर्मशास्त्री हैं, जिनकी किताब वास्तव में मेरी सूची में है। मैं उनकी प्रसिद्ध पुस्तक, *द मीडिएटर* के बारे में बात करूँगा।

केल्विन मेरा दूसरा व्यक्ति था, और फिर हमें एक समस्या या सिद्धांत चुनना था। मैंने प्रायश्चित के सिद्धांत को लिया, और इसने मुझे व्यवस्थित धर्मशास्त्र पढ़ाने के करियर में लॉन्च किया, उस ऐतिहासिक धर्मशास्त्र को पृष्ठभूमि के रूप में इस्तेमाल किया। मेरी सेमिनरी की डिग्री बाइबिल की व्याख्या में वास्तव में मजबूत थी, जिसे मैं सबसे अधिक महत्व देता हूँ, लेकिन मैंने इसे ऐतिहासिक धर्मशास्त्र की पृष्ठभूमि के साथ-साथ दो इंजील स्कूलों, स्नातक स्कूलों और सेमिनरियों में 35 वर्षों तक व्यवस्थित शिक्षण में अच्छे उपयोग में लाया।

तब मेरा शोध प्रबंध मसीह के कार्य के बारे में कैल्विन की समझ पर था। प्रमुख पुस्तकें, एमिल ब्रूनर की *द मीडिएटर*। ब्रूनर, बार्थ के साथ, शायद सबसे प्रसिद्ध नव-रूढ़िवादी धर्मशास्त्री थे।

बार्थ, ब्रूनर से कहीं ज़्यादा मशहूर थे, और बेशक, उनके बीच एक मशहूर झगड़ा हुआ था जिसमें बार्थ ने ब्रूनर पर हमला किया था, और वास्तव में यह उनकी भाषा में असावधानी का मामला था, और ब्रूनर को चोट लगी और शायद उनके जीवन के बाकी हिस्से में उस व्यक्ति ने चोट पहुंचाई

जिसे उन्होंने जर्मनी का धार्मिक तानाशाह कहा था। यह हिटलर का संदर्भ है और एक भयानक संदर्भ है, लेकिन मैं इसे समझता हूँ। वे दोनों प्रतिभाशाली थे।

क्या वे नव-रूढ़िवादी थे? हाँ, एक तरह से उन्होंने पुराने उदारवाद की कई गलतियों को सुधारा। क्या बाइबिल के बारे में इंजील ईसाइयों का दृष्टिकोण था? नहीं, हालाँकि बार्थ का बाइबिल का उपयोग अच्छा था, लेकिन दोनों में से कोई भी किसी भी तरह की गलती को स्वीकार नहीं करेगा, और दुख की बात है कि ब्रूनर ने बाइबिल की विनाशकारी उदारवादी आलोचना को कैल्विन की तुलना में शास्त्रों को अधिक दूर ले जाने की अनुमति दी। फिर बार्थ ने ऐसा किया, हालाँकि वे दोनों ऐतिहासिक पतन से इनकार करते थे।

आप कहते हैं, क्या वे लोगों को पापी मानते थे, जिसमें वे खुद भी शामिल थे? हाँ। एमिल ब्रूनर को पढ़ते हुए, जब मैं कहता हूँ कि वे यीशु को अपना भगवान और उद्धारकर्ता मानते थे, तो हाँ। क्या इससे उनकी ज्ञानमीमांसा सही साबित होती है? नहीं, और मैं बहुत दूर जा रहा हूँ।

एमिल ब्रूनर की द मीडिएटर वास्तव में एक अच्छी किताब है। वह मसीह को उनके उद्धारक कार्य में मुख्य रूप से दंडात्मक विकल्प के रूप में प्रस्तुत करता है, जो वास्तव में एक अच्छा और ठोस कार्य है, ऐसे समय में जब विश्व-सम्मानित धर्मशास्त्री एमिल ब्रूनर, द मीडिएटर द्वारा इसे प्रसारित करने की वास्तव में आवश्यकता थी। स्वीडिश विद्वान गुस्ताव एलेन ने प्रसिद्ध पुस्तक क्राइस्टस विक्टर लिखी, और यह मसीह के कार्य के ऐतिहासिक विचारों के हमारे सर्वेक्षण में सामने आती है।

लेकिन मैं अभी यही कहूँगा कि यह एक उल्लेखनीय पुस्तक है। मुझे ऐसी बहुत सी पुस्तकें नहीं पता हैं जिनके शीर्षक धर्मशास्त्र के लिए एक नामकरण बन गए हों, लेकिन हम इस बारे में बात करते हैं कि क्राइस्टस विक्टर प्रायश्चित के बारे में कैसे सोचते हैं। उन्होंने उदार नैतिक प्रभाव सिद्धांत के बीच एक मध्य मार्ग को आगे बढ़ाने की कोशिश की, जिसमें कहा गया था कि यीशु मुख्य रूप से प्रायश्चित करने के लिए नहीं बल्कि हमारे दिलों को बदलने के लिए मरे थे, और रूढ़िवादी दंड प्रतिस्थापन सिद्धांत, जिसमें कहा गया था कि यीशु हमारे पापों के लिए दंड का भुगतान करने के लिए मरे थे।

उन्होंने मसीह को महान विजेता के रूप में महत्व दिया, जिन्होंने हमारे शत्रुओं, विशेष रूप से बुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त की और अपने लोगों को मुक्ति दिलाई। मैं कई तरीकों से इसकी प्रशंसा करते हुए इसका विस्तृत मूल्यांकन करूँगा, कुछ अन्य तरीकों से इसकी आलोचना करूँगा जहाँ इसकी आलोचना की आवश्यकता है, लेकिन गुस्ताव एलेन का *क्राइस्टस विक्टर* एक प्रमुख, प्रमुख कार्य था। प्रायश्चित के सिद्धांत के इतिहास पर अपनी डॉक्टरेट परीक्षा की तैयारी में, मैं हर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यक्ति और अवधि को जानने के लिए जिम्मेदार था।

उस समय भी हमें इसकी अनुमति थी; जब तक मैं स्नातक हुआ, तब तक यह अवैध हो चुका था, लेकिन हमें विचार प्राप्त करने के लिए पिछली परीक्षाओं को देखने की अनुमति थी। मसीह के कार्य पर प्रत्येक डॉक्टरेट परीक्षा में एक पुस्तक पर एक प्रश्न था, और वह गुस्ताव एलेन की

क्राइस्टस विक्टर थी। इसलिए यही कारण था कि मैंने उस पुस्तक को वास्तव में अच्छी तरह से सीखा।

अंत में, वह रूढ़िवादी नहीं है, और उसकी लूथरन प्रवृत्ति ने उसे पुराने नियम को कमतर आंकने के लिए प्रेरित किया, लेकिन वह एक अच्छा विषय देखता है: मसीह विजेता, चैंपियन। यह बाइबिल है। उदारवादियों और रूढ़िवादियों दोनों ने इसे नजरअंदाज किया था, लेकिन फिर वह आगे बढ़ता है और इसे चर्च फादर्स में पढ़ता है जहां यह मौजूद है और लूथर में जहां यह मौजूद है, लेकिन लूथर का विचार क्राइस्टस विक्टर और दंडात्मक प्रतिस्थापन के बीच समान रूप से विभाजित है, और एलेन केवल पूर्व को ही देखता है।

और इसके अलावा, वह बाइबिल के साथ भी यही करता है। हाँ, इब्रानियों 2:15 मसीह को हमारा चैंपियन सिखाता है, लेकिन नहीं, यह इब्रानियों में मसीह के उद्धार कार्य का मुख्य विषय नहीं है। अच्छा शोक निश्चित रूप से बलिदान का मूल भाव है जिसके लिए इब्रानियों को उचित रूप से सबसे प्रसिद्ध माना जाता है।

ऑस्ट्रेलियाई न्यू टेस्टामेंट विद्वान लियोन मॉरिस एक अद्भुत और ईश्वरीय व्यक्ति हैं। एक बार मैंने एक छोटी सी घटना सुनी थी कि जब उनकी पत्नी कार चला रही थीं, तब उन्होंने खुद को न्यू टेस्टामेंट ग्रीक सिखाया था। मुझे नहीं पता कि वे ऑस्ट्रेलिया में कहाँ जा रहे थे, लेकिन यह एक बड़ा देश है।

उन्होंने खुद को ग्रीक भाषा सिखाई, जबकि उनकी पत्नी कार चलाती थीं। वैसे भी, उन्होंने बाइबिल की कई पुस्तकों पर टिप्पणियों के साथ बाइबिल के अध्ययन में प्रमुख योगदान दिया और मुझे लगता है कि जॉन पर उनकी टिप्पणी बहुत मददगार रही। उन्होंने इससे कहीं ज़्यादा काम किया, लेकिन प्रायश्चित के सिद्धांत पर भी।

उनकी पुस्तक, *द अपोस्टोलिक प्रीचिंग ऑफ द क्रॉस*, उद्धार के बाइबिल के शब्दों के उपचार के लिए उचित रूप से प्रसिद्ध है। आप जानते हैं, कई बार, शब्दों पर आधारित अध्ययन विकृत हो जाते हैं, लेकिन उनके साथ ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने परमेश्वर के मेमने, मोचन, सुलह और प्रायश्चित पर दो अध्यायों का अध्ययन किया क्योंकि इस पर हमला किया जा रहा था, जिसके बारे में हम शायद अगले व्याख्यान में बात करेंगे।

नहीं, इस पुस्तक में आगे चलकर, मैं सोचूंगा, जब हम बाइबिल की बातों को समझने की बात करेंगे, क्योंकि यह रोमियों 3:25 और 26 को बहुत प्रभावित करता है। वैसे भी, मॉरिस ने प्रायश्चित के पारंपरिक दृष्टिकोण, सुधारवादी दृष्टिकोण का बचाव किया। यह एक अद्भुत पुस्तक है।

बलिदान, यीशु हमारे पुजारी। उन्होंने *न्यू टेस्टामेंट में क्रॉस भी लिखा*, जो उन शब्दों और चित्रों का अध्ययन करने के बजाय, सभी न्यू टेस्टामेंट कॉर्पस के माध्यम से चला गया, यीशु ने जो किया उसके बारे में उनकी शिक्षाओं का सारांश दिया, और इसके अलावा प्रायश्चित पर और भी किताबें लिखीं। मुझे लगता है कि मैं इंटरवर्सिटी वाले का नाम भूल गया, लेकिन शायद इसे *प्रायश्चित कहा जाता है*।

वैसे भी, लियोन मॉरिस ने एक महत्वपूर्ण योगदान दिया और सी.ई.बी. क्रेनफील्ड जैसे प्रसिद्ध विद्वानों को आश्चर्य किया, जिनकी दो खंडों वाली रोमन कमेंट्री ने महान आलोचनात्मक श्रृंखला के लिए कहा कि मॉरिस ने रोमियों 3:25, 26 में प्रायश्चित पर बहस जीती है। वह आश्चर्य करने वाला है, और सी.एच. डोड से बेहतर है, जिनका नाम मैं यहाँ कभी-कभी ले रहा हूँ, जिन्होंने उस संदर्भ में तर्क दिया, नहीं, इसका मतलब प्रायश्चित नहीं है। यह एक बुतपरस्त धारणा है जिसे नए नियम में आयात किया गया है।

बल्कि, इसका अर्थ प्रायश्चित है। मैं तर्क देने जा रहा हूँ, वास्तव में, यीशु की मृत्यु प्रायश्चित और प्रायश्चित दोनों को पूरा करती है, लेकिन रोमियों 3:25, 26 के संदर्भ में, रोमियों 1-3 के बड़े संदर्भ में, यह निश्चित रूप से प्रायश्चित की बात करता है। जीसी बर्कौवर की मैजिस्ट्रियल सीरीज़, *स्टडीज़ इन डॉगमैटिक्स*, मुझे कुछ साल पहले अपने कार्यालय में एर्डमैन के प्रतिनिधि को देखकर दुख हुआ, जो मुझसे कह रहे थे, ओह, हम अब उन पुस्तकों के बारे में इतने पागल नहीं हैं।

इससे मुझे दुख हुआ क्योंकि बर्कौवर की श्रृंखला अद्भुत थी और ऐतिहासिक धर्मशास्त्र में बहुत मजबूत थी। मैं कुछ साथी छात्रों को जानता हूँ जिन्होंने कहा, हाँ, लेकिन मुझे यह पसंद नहीं है। वह अपना मन नहीं बनाता।

मुझे यह इसी कारण से पसंद है। आपको अपना मन खुद बनाना होगा, लेकिन उन्होंने ऐतिहासिक धर्मशास्त्र का बहुत खूबसूरती से सर्वेक्षण किया है, और उन्होंने प्रसिद्ध उच्च धर्मशास्त्री

जीसी बर्कौवर की पुस्तक, *द वर्क ऑफ़ क्राइस्ट के प्रायश्चित के लिए भी ऐसा किया है*। एच. डरमोट मैकडोनाल्ड ने एक पुस्तक लिखी जिसने वास्तव में मेरी मदद की, और वास्तव में, इस एक के बाद अगले व्याख्यान के लिए, *द एटोनमेंट ऑफ़ द डेथ ऑफ़ क्राइस्ट में बाइबिल की सामग्री पर एक खंड है*, और यह अच्छा है, लेकिन फिर उन्होंने प्रायश्चित के ऐतिहासिक धर्मशास्त्र पर एक व्यापक उपचार, शायद कुछ सौ पृष्ठों का, दिया है, और यह उत्कृष्ट है।

यह बहुत मददगार है। इसने मुझे उन व्याख्यानों को शानदार बनाने के लिए आवश्यक उद्धरण प्रदान किए, क्योंकि अगर मैं आपको बताऊँ कि एंसेलम ने संतुष्टि सिखाई, और उन्होंने ऐसा किया, तो यह एक बात है, लेकिन जब आप उनके अपने शब्द सुनते हैं तो यह कुछ और होता है। यह बहुत सुंदर है।

मैकडोनाल्ड ने इस संबंध में बहुत बढ़िया काम किया है। एच. डरमोट मैकडोनाल्ड, एक सच्चे इंजील ईसाई हैं, जिन्होंने अन्य पुस्तकों के अलावा, ईश्वर के रहस्योद्घाटन के अध्ययन के इतिहास पर एक बहुत बड़ी पुस्तक भी लिखी है, रहस्योद्घाटन की पुस्तक नहीं, बल्कि ईश्वर ने खुद को प्रकट किया, खासकर 19वीं और 20वीं शताब्दी में, कुछ ऐसा ही, इस तरह से वे एक बेहतरीन विद्वान हैं। जॉन स्टॉट की महान कृति, जैसा कि मैंने अलग-अलग दोस्तों और विद्वानों से सुना है, *द क्रॉस ऑफ़ क्राइस्ट* है, जो एक अद्भुत पुस्तक है।

यह उनके दो दृष्टिकोणों को जोड़ता है, बाइबल का उनका विस्तृत अध्ययन, और आधुनिक दुनिया में बाइबल की शिक्षाओं को संबोधित करना। यह पुस्तक शास्त्रों के दंडात्मक प्रतिस्थापन विषय के लिए एक माफ़ीनामा बन जाती है। क्या वह संभवतः इसका अति-मूल्यांकन कर सकता है? हाँ, वह कर सकता था, लेकिन ऐसे समय में जब न केवल उदारवादी बल्कि रूढ़िवादी दंडात्मक प्रतिस्थापन पर हमला कर रहे हैं, मैं पुस्तक में आनन्दित हूँ, और फिर से, लेखन और चित्रण बस अद्भुत हैं।

क्राइस्ट का क्रॉस। मुझे लगता है कि अगर कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति को कोई किताब सुझाता है, जो इन चीजों को सीखना और समझना चाहता है, तो यह वाकई एक अच्छी किताब है। रॉबर्ट लेथम ने इनर वर्सिटी सीरीज में एक किताब लिखी है, कॉन्ट्रर्स ऑफ क्रिश्चियन थियोलॉजी ऑन द वर्क ऑफ क्राइस्ट, और यह एक बेहतरीन किताब है।

रॉबर्ट लेथम अपने मूल देश ग्रेट ब्रिटेन लौट आए हैं, मैं वेल्स कहना चाहता हूँ, लेकिन मुझे पक्का पता नहीं है, और अब वे वहाँ एक स्कूल में पढ़ाते हैं। कई सालों तक, उन्होंने डेलावेयर में एक चर्च में पादरी के रूप में काम किया और फिलाडेल्फिया में वेस्टमिंस्टर थियोलॉजिकल सेमिनरी में मसीह के व्यक्तित्व और मसीह के कार्य पर पाठ्यक्रम पढ़ाए। बॉब लेथम का काम अच्छा है।

हाल ही में उन्होंने *द सिस्टमैटिक थियोलॉजी प्रकाशित की है*। यह बेहतरीन है। यह पूरी तरह से रूढ़िवादी है और समकालीन विचारों के साथ उस तरह से बातचीत करता है जिसकी मुझे ज़रूरत है क्योंकि मैं समकालीन विचारों के साथ इतनी अच्छी तरह से बातचीत नहीं करता।

वह कैल्विन और उससे पहले चर्च के फादर यूसेबियस के पास वापस जाता है, जो मसीह के तीन-स्तरीय पद, भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा का उपयोग करता है। उदारवादियों द्वारा उस विचार पर हमला किए जाने के कारण यह विचार अप्रसन्न हो गया, और यह शर्मनाक था क्योंकि हमें हर किसी की बात सुननी चाहिए, लेकिन हमें बाइबल द्वारा शासित होना चाहिए, इसलिए फिर से एक शास्त्र, और हमलों पर इतनी प्रतिक्रिया करके नहीं। लेथम मसीह को एक भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा के रूप में मानते हैं।

इस दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण खतरा यह है कि यह यीशु द्वारा हमारे लिए किए गए कार्यों के बारे में शास्त्र में कही गई बातों को शामिल करता है, लेकिन मसीह का उद्धारक कार्य इतना महान है कि मैं फिर से ऐसे विशेषणों की तलाश कर रहा हूँ जो इसमें नहीं हैं, तीन गुना पद या तीन पद, सभी डेटा को ध्यान में नहीं रखते हैं। तो, वह क्या करता है? वह पुस्तक को भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा के साथ व्यवस्थित करता है, लेकिन फिर उसके पास अतिरिक्त अध्याय हैं, जो कि उन क्षेत्रों को संबोधित करने के लिए बिल्कुल आवश्यक है जो मसीह के तीन पदों के अंतर्गत नहीं आते हैं। मैं बिना किसी शर्म के, इस संबंध में अपनी खुद की दो पुस्तकों के बारे में बात करूँगा।

कैल्विन और प्रायश्चित्त मेरे शोध प्रबंध का दूसरा संस्करण है, और मैं तुरंत कहूँगा कि यह सीमित प्रायश्चित्त के बारे में नहीं है। हर कोई यह सवाल पूछता है। असल में, मैंने अभी लेथम का ज़िक्र किया है, और मैं लोगों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता।

क्या कैल्विन ने सीमित प्रायश्चित सिखाया? नहीं, लेकिन उन्होंने असीमित प्रायश्चित भी नहीं सिखाया। यहाँ मैंने जो पाया, वह है, और मैं पुस्तक के बारे में बात करने जा रहा हूँ, लेकिन यहाँ मैंने जो पाया, वह है। लोग कैल्विन में प्रायश्चित की सीमा के बारे में अपने विचार पढ़ते हैं।

इसलिए, बहुत से सुधारवादी लोग, बहुत से पाँच-बिंदु वाले कैल्विनिस्ट सीमित प्रायश्चित पढ़ते हैं, और आप ऐसा कर सकते हैं। हालाँकि, जो लोग असीमित प्रायश्चित में विश्वास करते हैं, वे इसे कैल्विन में पढ़ते हैं, और वे भी ऐसा कर सकते हैं। ऐसा लगता है कि वह बहुत सावधान नहीं था, लेकिन मैं कहूँगा कि विशेष मोचन या विशेष प्रायश्चित एक वैध विकास है।

सभी धर्मशास्त्र और सभी धार्मिक प्रणालियाँ विकसित होती हैं। यह कैल्विन के अपने विचारों का एक वैध विकास है, लेकिन मैं रॉबर्ट लेथम से सहमत हूँ। जाहिर है, वह और मैं दुनिया में केवल दो लोग हैं जो ऐसा सोचते हैं; बाकी सभी पक्ष ले रहे हैं और कह रहे हैं कि यह बाद का विकास लगता है।

उनके उत्तराधिकारी, थियोडोर बेज़ा ने इसे स्पष्ट रूप से सिखाया, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह कैल्विन के बारे में था। वह किस बारे में था? वह मसीह के कार्य के इन बाइबिल चित्रों के बारे में था। मैं डॉक्टरेट की पढ़ाई के लिए गया था और लूथरन कैल्विन और अंग्रेजी सुधार पर पाठ्यक्रम लिया था, और अगर आप मुझसे पूछें कि यीशु ने हमें बचाने के लिए क्या किया, तो मैं कहूँगा कि उसने हमारे पापों के लिए महान बलिदान दिया, और उसने हमारे पापों के लिए दंड का भुगतान किया, और ये दोनों सत्य हैं।

ये दोनों बाइबल के विषय हैं और मसीह के कार्य की सच्चाईयों हैं। क्या वे व्यापक रूप से सारांशित करते हैं? नहीं, वे जो कुछ उन्होंने किया उसका व्यापक रूप से सारांशित नहीं करते हैं, और यहाँ, लूथर की कक्षा में बैठे हुए, मैंने क्राइस्टस विक्टर के बारे में सीखा। लूथर ने मसीह को बाइबल के तरीके से प्रस्तुत करने में आनन्दित होकर पाप और मृत्यु और कब्र और राक्षसों और नरक के हमारे शत्रुओं को हराया।

मसीह विजेता है, और फिर कैल्विन में मैंने और भी विषय देखे जिससे मुझे इस दिशा में आगे बढ़ना शुरू हुआ, जिसका समापन मेरी पुस्तक, उद्धार पुत्र द्वारा पूरा किया गया, मसीह का कार्य, में हुआ, और उस पुस्तक में दो प्रमुख खंड हैं, जो इन व्याख्यानों में परिलक्षित होते हैं या प्रभु की इच्छा से होंगे। पुस्तक का आधा हिस्सा मसीह की नौ उद्धारक घटनाओं से संबंधित है, जिन्हें मैंने पहले ही एक संक्षिप्त कंपास में संक्षेप में प्रस्तुत किया है, और मैं उनके आने तक प्रतीक्षा करूँगा। हम उन्हें और अधिक विस्तार से करेंगे, दोनों नियमों और नए नियम के हर भाग में एक के बाद एक अंश दिखाते हुए कि कैसे यीशु, अपने अवतार से लेकर दूसरे आगमन तक, हमें बचाता है, हमें बचाता है, विशेष रूप से उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान।

पुत्र द्वारा प्राप्त उद्धार का दूसरा भाग बाइबिल के चित्रों में है। घटनाएँ स्वयं व्याख्या नहीं कर रही हैं, यहाँ तक कि परमेश्वर की घटनाएँ भी नहीं। प्राचीन निकट पूर्व में लोग जिन्होंने यहोवा द्वारा इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाने के बारे में सुना, वे यह नहीं कहेंगे कि, ओह, वह जीवित और सच्चा परमेश्वर है; कोई दूसरा नहीं है।

नहीं, वे ऐसा नहीं कहेंगे। वे शायद कुछ ऐसा कहेंगे, वाह, यहोवा मिस्र के देवताओं से महान है, कम से कम उस समय तो वह महान था, या ऐसा ही कुछ। और क्या वे वास्तव में अपने असीरियन या बेबीलोन के देवताओं को त्याग देंगे? मुझे गलत मत समझिए, मैं सोचता हूँ कि यहोवा ही एकमात्र सच्चा और जीवित परमेश्वर था, लेकिन नहीं, उनका विश्वदृष्टिकोण उन्हें ऐसे निष्कर्ष पर नहीं ले जाएगा।

यह उल्लेखनीय है कि कुछ मिस्रवासी इस्राएलियों के साथ बाहर आए। क्या आप अपनी पूरी संस्कृति, शायद अपने परिवार को छोड़ने की कल्पना कर सकते हैं? यह मेरे लिए आश्चर्यजनक है और उस रहस्योद्घाटन की महानता को दर्शाता है। हालाँकि, घटनाएँ स्व-व्याख्या नहीं की जाती हैं, और परमेश्वर ने निर्गमन के कर्म रहस्योद्घाटन के साथ-साथ वचन रहस्योद्घाटन भी दिया।

मिरियम के गीत, मूसा के गीत के बारे में सोचिए, जो कई भजनों की व्याख्या करते हैं। हे भगवान, निर्गमन की घटना पूरे पुराने नियम में मनाई जाती है। परमेश्वर अपने कार्यों की व्याख्या करने के लिए शब्द देता है।

मेरे मन में इस बात का सर्वोच्च उदाहरण है कि किस तरह कर्म रहस्योद्घाटन के लिए अपनी व्याख्या और बोधगम्यता के लिए शब्द रहस्योद्घाटन की आवश्यकता होती है, वह है क्रूस। लोग यीशु के क्रूस के नीचे खड़े होकर उसका गलत अर्थ निकालते थे। उसने दूसरों को बचाया। उसे खुद को बचाने दो।

विडंबना यह है कि उन्होंने अपने स्वयं के धर्मग्रंथों की पूर्ति में उपहास और मज़ाक उड़ाया। मैं समझता हूँ कि दो चोरों में से एक ने विश्वास किया, और जाहिर है, सूबेदार ने विश्वास किया, लेकिन परमेश्वर न केवल यीशु के क्रूस और पुनरुत्थान में सक्रिय था, बल्कि उसने उन महत्वपूर्ण घटनाओं की व्याख्या करने के लिए शब्द भी दिए। और मैं गिनता हूँ, नए नियम में मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान की कई तस्वीरें हैं, लेकिन दो, लेकिन छह, क्षमा करें, सबसे व्यापक हैं मोचन, वह हमारा मुक्तिदाता है, सुलह, वह हमारा शांतिदूत है, दंडात्मक प्रतिस्थापन।

उसने वह दंड चुकाया जो हम कभी नहीं चुका सकते। जिसे मैं दूसरे आदम की नई रचना कहता हूँ, वह वहाँ जीतता है जहाँ आदम असफल हुआ था और जो आदम ने खोया था उसे पुनः स्थापित करता है। बलिदान और शुद्धिकरण पाँचवाँ है, और मुझे एक और चाहिए।

मुक्ति, सुलह, दंडात्मक प्रतिस्थापन। ओह, मसीह निश्चित रूप से विजेता है। विजय, विजय का मूल भाव।

मसीह अपनी मृत्यु और विशेष रूप से अपने पुनरुत्थान में। पवित्रशास्त्र उसकी मृत्यु को विजय का श्रेय देता है। यहून्ना और उसका पुनरुत्थान उसके और हमारे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है।

ये कुछ मुख्य पुस्तकें हैं जिन्होंने मुझे प्रभावित किया है और मैं आपको उनकी अनुशंसा करता हूँ। बाइबिल की ध्वनियाँ। जैसे-जैसे हम मसीह की घटनाओं, विशेष रूप से उसकी मृत्यु और

पुनरुत्थान, और बाइबिल के चित्रों के माध्यम से काम करते हैं, जिन्हें मैंने अभी विस्तार से गिनाया है, हम एक के बाद एक अंशों को देखेंगे।

ठीक है, लेकिन इनमें से ज़्यादातर व्याख्यानों के लिए, वास्तव में, दो अंश इतने उत्कृष्ट और इतने महत्वपूर्ण हैं कि मैं बाइबिल की आवाज़ों को लेना चाहूँगा, जैसे कि पानी की गहराई का अंदाजा लगाना, अगर आप चाहें, और वे रोमियों 3:25, 26 हैं, जो महान प्रायश्चित अंश है। लेकिन सबसे पहले, यशायाह 53। यशायाह 53 यशायाह 52 से शुरू होता है।

आप जानते हैं कि अध्याय और पद विभाजन प्रेरित नहीं हैं। यदि आप देखना चाहते हैं कि वे कैसे आए, तो यह एक मनोरंजक छोटी पुस्तक है। बेरिल स्माले, मध्य युग में बाइबिल का अध्ययन, या मध्य युग में बाइबिल का निर्माण, मुझे लगता है कि यह अध्ययन है।

बेरिल स्माले ने अपनी किताब द स्टडी ऑफ द बाइबल इन द मिडिल एज में बताया है कि कैसे पेरिस में मध्यकालीन स्कूली छात्रों ने एक दूसरे के साथ कुश्ती लड़ी और उनमें से एक जीत गया। और हमें उनके अध्याय और पद्य विभाजन मिलते हैं। हमेशा सबसे अच्छा अध्याय और पद्य विभाजन नहीं होता।

और यशायाह 52 वास्तव में 53 में शुरू होता है, 52:13 में शुरू होता है। चार सेवक गीत थे, यशायाह 42, 49, 50, और फिर यह 52:13 से 53:12। और कभी-कभी एक सेवक स्पष्ट रूप से इस्राएल होता है।

यहाँ, सेवक एक इस्राएली है जो राष्ट्र की ओर से कार्य करता है, न केवल राष्ट्र बल्कि राष्ट्रों के लोगों की ओर से भी। कुछ मायनों में उसके कार्य का एक सार्वभौमिक महत्व है जो यहाँ पुराने नियम में पहले से ही प्रकट है। वास्तव में, इस अंश के बारे में जो बात मुझे आश्चर्यचकित करती है वह यह है कि यह इतना अद्भुत और शक्तिशाली है।

मुझे किसी भी नियम में कोई ऐसा अंश नहीं पता है, और मैं ऐसा कभी नहीं कहता, मैं शायद ही कभी ऐसा कहता हूँ, जो नए नियम की तस्वीर को इस तरह स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता हो। जब आप प्रभु के भोज में अपना सिर झुकाते हैं और ध्यान करते हैं, तो आप यशायाह 53:4, 5, और 6 को नहीं हरा सकते। यह बहुत ही आश्चर्यजनक है।

मेरे पादरी, वैन लीस और मैंने हाल ही में एक किताब लिखी है जिसका नाम है *जीसस इन प्रोफेसी*, *हाउ द लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट फुलफिल्स बाइबिल प्रेडिक्शन्स*। और पादरी वैन चित्रण में मुझसे कहीं बेहतर हैं। उनके जीवन का एक सच्चा चित्रण इस अध्याय से जुड़ा है।

एक बार वह घर-घर जाकर प्रचार कर रहे थे, मुझे लगता है कि यही संदर्भ था, और एक व्यक्ति ने उनसे कहा, मैं हाल ही में, अब ईसाई नहीं रहा; मैं हाल ही में यहूदी बन गया हूँ, इसलिए यदि आप मुझसे सुसमाचार के बारे में बात करना चाहते हैं, तो आप केवल पुराने नियम में ही रह सकते हैं। उन्होंने कहा, ठीक है, यह ठीक रहेगा। यदि आप डॉ. लीस को जानते हैं, तो आप जानते हैं कि यह ठीक था।

इसलिए वह इन शब्दों को पढ़ता है। निश्चय ही, उसने हमारे दुखों को सहा है और हमारे दुखों को उठाया है। लेकिन वह हमारे अपराधों के लिए छेदा गया था।

वह हमारे अधर्म के कारण कुचला गया। उस पर वह दण्ड पड़ा जिससे हमें शांति मिली। और उसके घावों से हम चंगे हुए।

उस आदमी ने विरोध किया, एक मिनट रुको, मैंने कहा कि आप न्यू टेस्टामेंट का उपयोग नहीं कर सकते। और वैन ने कहा कि मैं न्यू टेस्टामेंट का उपयोग नहीं कर रहा हूँ। और वह आदमी, जाहिर है, वह जानता था कि वचन यीशु के बारे में इतनी स्पष्ट रूप से बोलता है कि उसने कहा, ठीक है, शायद हम इस बारे में किसी और समय बात करें।

मुझे और भी सोचना है। हाँ, मुझे लगता है कि यह एक अच्छा विचार है, मेरे दोस्त। यशायाह 52:13 से 53 के अंत तक।

देखो, मेरा सेवक बुद्धिमानी से काम करेगा। वह ऊँचा और ऊंचा किया जाएगा और ऊंचा किया जाएगा। आगे जो कुछ कहा गया है, उसके संदर्भ में ये शब्द बहुत ही विडंबनापूर्ण हैं।

बहुत से लोग तुम्हें देखकर चकित हुए, क्योंकि उसका रूप मनुष्य के समान नहीं था, और उसका रूप मनुष्य के समान नहीं था। इसी प्रकार वह बहुत सी जातियों पर भी अपना प्रभाव डालेगा। उसके कारण राजा अपना मुँह बंद कर लेंगे।

क्योंकि जो कुछ उन्हें नहीं बताया गया, उसे वे देखते हैं। और जो उन्होंने नहीं सुना, उसे वे समझते हैं। जो कुछ उसने हमसे सुना है, उस पर किसने विश्वास किया है? और किस पर प्रभु का भुजबल प्रकट हुआ है? क्योंकि वह उसके सामने एक छोटे पौधे की तरह और सूखी भूमि में फूटी जड़ की तरह उगा।

उसमें न तो कोई रूप था, न ही कोई ऐश्वर्य कि हम उसे देखें, न ही कोई सुंदरता कि हम उसे चाहते हों। वह लोगों द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकार किया गया था, वह दुखों का आदमी था और दुख से परिचित था। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिससे लोग अपना चेहरा छिपाते थे, इसलिए उसे तिरस्कृत किया गया, और हमने उसे तुच्छ समझा।

निश्चय उसने हमारे दुखों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया। फिर भी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया।

वह हमारे अधर्म के कारण कुचला गया। उस पर वह दण्ड पड़ा जिससे हमें शांति मिली। और उसके घावों से हम चंगे हुए।

हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए हैं। हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया है। और यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया है।

वह सताया गया और उसे सताया गया, फिर भी उसने अपना मुँह नहीं खोला। जैसे एक मेमना वध के लिए ले जाया जाता है और एक भेड़ अपने ऊन कतरने वालों के सामने चुप रहती है, वैसे ही उसने अपना मुँह नहीं खोला। वह अत्याचार और न्याय के द्वारा छीन लिया गया था।

और उसके वंश के विषय में, किसने विचार किया कि वह मेरे लोगों के अपराध के कारण जीवितों की भूमि से अलग कर दिया गया था? और उन्होंने उसकी कब्र दुष्टों के साथ बना दी और उसकी मृत्यु में धनवान के साथ, यद्यपि उसने कोई हिंसा नहीं की थी और उसके मुँह से कोई छल की बात नहीं निकली थी। फिर भी उसे कुचलना यहोवा की इच्छा थी। उसने उसे दुख में डाल दिया है।

जब उसका प्राण दोष के लिये बलिदान करेगा, तब वह अपनी सन्तान को देखेगा। वह अपने जीवन के दिन बढ़ाएगा। उसके हाथ में यहोवा की इच्छा पूरी होगी।

वह अपने प्राणों की वेदना से देखेगा और तृप्त होगा। मेरा सेवक धर्मी अपने ज्ञान के द्वारा बहुतों को धर्मी ठहराएगा, और उनके अधर्म का बोझ स्वयं उठाएगा। इस कारण मैं उसे बहुतों के संग भाग दूंगा, और वह बलवानों के संग लूट बाँटेगा, क्योंकि उसने अपने प्राण मृत्यु के लिये उंडेल दिए, और वह अपराधियों के संग गिना गया।

फिर भी उसने बहुतों के पाप सहे और अपराधियों के लिए मध्यस्थता की। ऐसा करना कठिन है, लेकिन अगर आप दिखावा करते हैं कि आपने इसे पहले कभी नहीं सुना और आपने इसे पहली बार सुना है, तो मुख्य विषय क्या है? वर्षों से मेरे कई छात्र कहेंगे, ओह, प्रतिस्थापन, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक प्रमुख विषय है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह आपकी पहली प्रतिक्रिया होगी। यदि आपने इसके बारे में कभी नहीं सुना है, तो मुझे लगता है कि आप सेवक की जबरदस्त पीड़ा से दुखी होंगे।

ओह माय, उसकी शक्ल इतनी खराब हो गई थी, 52:14, मानवीय समानता से परे। यह ऐसा है जैसे किसी माता-पिता को बच्चे के शव की पहचान करने के लिए मुर्दाघर में बुलाया जा रहा हो। यह पहचान में नहीं आ रहा है।

यह बहुत दुःखद है। यह घिनौना है। यह भयानक है।

उसका स्वरूप मानव जाति के बच्चों से भी अधिक खराब हो गया था। नौकर के साथ दुर्व्यवहार किया गया। पीड़ा बहुत ज़्यादा है।

वह लोगों द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकृत है। वह दुखों से भरा हुआ व्यक्ति है, जो दुख से परिचित है, और जिससे लोग अपना चेहरा छिपाते हैं। वह तिरस्कृत था।

हमने उसका सम्मान नहीं किया। बेचारा नौकर अकेले ही तकलीफ़ झेलता है। हम सभी जब तकलीफ़ में होते हैं, तो यह कितना सुकून देने वाला होता है कि हमारे साथ दूसरे लोग हैं जो हमारी परवाह करते हैं।

उसके पास कोई नहीं है। दूसरा सवाल जो मैं पूछना चाहता हूँ, और यह एक पेचीदा सवाल है, क्या यह पीड़ा न्यायसंगत है या अन्यायपूर्ण? खैर, पहली बात जो आप कहते हैं वह यह है कि यह अन्यायपूर्ण है। मेरा मतलब है, अच्छा दुख है।

श्लोक 8 में कहा गया है कि अत्याचार और न्याय के द्वारा उसे ले जाया गया। यह धिनौना है। और श्लोक 9 में कहा गया है कि उसने कोई हिंसा नहीं की।

उसके मुँह में कोई छल-कपट नहीं था। कितने लोगों के बारे में ऐसा कहा जा सकता है? किसी के बारे में नहीं। नौकर पाप-रहित मालूम पड़ता है।

वास्तव में, श्लोक 11 में उसे मेरा धर्मी सेवक कहा गया है या ESV में धर्मी को मेरा सेवक कहा गया है। इसलिए, पीड़ा भयानक है। सेवक को पीटा जाता है, या उसके साथ जो कुछ भी किया जाता है, वह पहचान से परे है।

और वह कुचला हुआ है। उसके शरीर पर घाव हैं। वह दबा हुआ और पीड़ित है।

और फिर भी वह धर्मी सेवक है जिसने हिंसा से या अपने मुँह से पाप नहीं किया है। हमारे लिए मामले जटिल हैं, और हमें कहना चाहिए कि सज़ा न्यायसंगत है। आपने जो अभी कहा उसके बाद आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? हमें यह कहना होगा कि यह पद 10 के कारण न्यायसंगत है।

फिर भी यह प्रभु की इच्छा थी कि उसे कुचल दिया जाए। उसने उसे दुख में डाल दिया है। एक मिनट रुको।

अगर परमेश्वर सेवक को दण्ड दे रहा है, तो यह भावना होनी चाहिए कि यह न्यायपूर्ण है। हम ऐसा क्यों कहते हैं? हम परमेश्वर के चरित्र के आधार पर ऐसा कहते हैं। बाइबल हमें वह सब कुछ नहीं बताती जो हम जानना चाहते हैं, लेकिन यह हमें परमेश्वर कौन है और हम उस पर भरोसा कर सकते हैं, इस बारे में बहुत सारी जानकारी देती है।

और यह डिज़ाइन के अनुसार है क्योंकि यही वह चीज़ है जिसे हमें सबसे पहले जानना चाहिए। हम इन चीज़ों को एक साथ कैसे जोड़ सकते हैं? मुझे यह कहने दीजिए। भले ही हम उन्हें एक साथ न जोड़ पाएं, लेकिन मुझे लगता है कि हमें नौकर की पीड़ा और न्याय के स्पष्ट अन्याय के साथ रहना चाहिए।

अगर भगवान ऐसा करते हैं तो यह न्यायपूर्ण ही होगा। इसी तरह, मैं एक उदाहरण देता हूँ। अगर देर रात को, एक कार हमारे सामने के दरवाजे पर आकर रुकी और एक महिला उसे चलाकर मुझे उतार दे, और मेरी पत्नी खुले दरवाजे पर खड़ी हो, तो उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी? क्या मैं कोई स्पष्टीकरण दे सकता हूँ? बेशक।

और यह अपेक्षित भी होगा। लेकिन क्या वह परेशान होगी या ईर्ष्यालु होगी? नहीं। क्यों? हमारी शादी को 47 साल हो गए हैं।

वह धैर्यवान महिला मेरी पत्नी रही है। और इसके विपरीत। अगर कोई आदमी उसे देर रात घर छोड़ता है, तो हाँ, अगर यहाँ कुछ अप्रत्याशित होता है तो मैं उसकी तलाश करूँगा।

यह योजनाबद्ध नहीं था। और मैं स्पष्टीकरण की अपेक्षा करता, लेकिन मुझे संदेह नहीं होता कि मेरी पत्नी सहमत हो सकती है। इसी तरह, भले ही हमारे पास कोई और जानकारी न हो, हम किसी भी विसंगति में भगवान पर भरोसा करेंगे।

ये चीजें कैसे काम कर सकती हैं? लेकिन बेशक, वे काम करती हैं। इस न्याय और अन्याय का एक साथ समाधान यह है कि न केवल एक सेवक की मृत्यु स्वैच्छिक है, बल्कि श्लोक 7 और 12 बी, 7 में, वह अपना मुँह नहीं खोलता है। वह चुप है।

वह इस निर्णय के साथ चलता है। और फिर, पद 12 में, बीच में 12, उसने अपनी आत्मा को मृत्यु के लिए उंडेल दिया। सेवक स्वेच्छा से पीड़ित होता है।

हम देखेंगे कि यह नए नियम में एक महत्वपूर्ण विषय है। कोई भी मेरा जीवन मुझसे नहीं छीन सकता, यूहन्ना 10. मैं इसे अपनी इच्छा से देता हूँ, यीशु ने कहा।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि न्याय और अन्याय की एक साथता इस तथ्य से हल हो जाती है कि सेवक की मृत्यु प्रतिस्थापन है। बाइबल में ऐसा कोई अध्याय नहीं है जो प्रतिस्थापन प्रायश्चित को इस अध्याय से अधिक दृढ़ता से सिखाता हो। उसने हमारे दुखों को सहा है और हमारे दुखों को उठाया है, श्लोक 4। वह हमारे अपराधों के लिए छेदा गया था।

यह पूरे बाइबल में प्रतिस्थापन प्रायश्चित पर सबसे अधिक भरी हुई आयत होनी चाहिए। हमारे अपराधों के लिए उसे छेदा गया। हमारे अधर्म के लिए उसे कुचला गया, यह एक मजबूत शब्द है।

उस पर वह दण्ड पड़ा जिससे हमें शांति मिली, और उसके घावों से हम चंगे हुए। हम सब भेड़ों की तरह भटक गए थे। हम में से प्रत्येक ने अपना-अपना मार्ग चुना, और प्रभु ने हम सब के अधर्म का बोझ उस पर डाल दिया।

यशायाह कहता है, यहूदियों के लिए, मेरे लोगों के अपराध के कारण उसे मारा गया। उसने बहुतों के पाप उठाए, 12 का अंत। प्रतिस्थापन इस अद्भुत सेवक गीत में सर्वत्र है।

नए नियम के रहस्योद्घाटन के प्रकाश में कुछ और भी उल्लेखनीय है, या मैं चीजों को पीछे की ओर ले गया। नया नियम इस अद्भुत बात को उठाता है। इस अध्याय में फिर से इतना खून-खराबा है कि मैं इस 53वें अध्याय की शुरुआत 52:13 से करता हूँ।

इतना खून-खराबा, पीड़ा और दंड सहना पड़ता है कि हम इस तथ्य को भूल जाते हैं कि खून-खराबा महिमा से घिरा हुआ है। यह बहुत उल्लेखनीय है, 52 13, मेरा सेवक बुद्धिमानी से काम करेगा। वह ऊंचा और ऊंचा किया जाएगा और ऊंचा किया जाएगा।

हम लगभग यह कहना चाहते हैं कि नहीं, प्रभु, वह नीचे गिर जाएगा, कुचला जाएगा, और उस पर पैर रखा जाएगा। नहीं, लेकिन भगवान यही कहते हैं, और यह एक अलग भाषा के साथ इसी तरह समाप्त होता है। मैं उसे बहुतों के साथ एक हिस्सा बांटूंगा।

वह लूटे हुए को बलवान के साथ बांटेगा। वह विजेता है, और वह लूट में हिस्सा लेता है। यह वास्तव में, जॉन के सुसमाचार में मनुष्य के पुत्र के ऊपर उठाए जाने के चित्र का स्रोत है।

अध्याय 12 में, जॉन संपादकीय टिप्पणी के साथ कहते हैं, यीशु ने अभी-अभी ऊपर उठाए जाने के बारे में बात की थी। इसके द्वारा, उन्होंने संकेत दिया कि वह किस तरह की मृत्यु मरने जा रहे थे, क्रूस पर चढ़ना। ओह, लेकिन जॉन में इसका दोहरा अर्थ है।

वह अपने पाठकों के साथ खेल रहा है। यीशु के दुश्मन सबसे बुरा यही कर सकते थे कि उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जाए, लेकिन इससे वह केवल पिता के पास वापस चला जाता। इस प्रकार, इस अध्याय में महिमा और पीड़ा एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

पीड़ा महिमा से घिरी हुई है, और वास्तव में, यह अध्याय स्वयं यीशु के पुनरुत्थान की ओर संकेत करता है। जॉन ओसवाल्ट, एक प्रसिद्ध ओल्ड टेस्टामेंट विद्वान, जिन्होंने यशायाह पर मेरी दो प्रसिद्ध टीकाएँ लिखीं, एक अर्मेनियाई ओल्ड टेस्टामेंट विद्वान द्वारा लिखी गई है। आप ऐसा क्यों कहते हैं? क्योंकि वह इसे सही कहते हैं।

वह यशायाह से प्यार करता है। वह यशायाह की महिमा और महानता का गुणगान करता है। नहीं, मैं उस पुस्तक में दी गई इच्छा की स्वतंत्रता की हर अभिव्यक्ति से सहमत नहीं हूँ, लेकिन यह सुंदर है।

यह जीवन का काम है, और वह सही कहता है कि यद्यपि अध्याय यीशु की मृत्यु पर केंद्रित है, लेकिन श्लोक 10 में, हमारे पास पुनरुत्थान की भाषा है। उसे कुचलना प्रभु की इच्छा थी। उसे दुःख पहुँचाने के लिए फिर से वही सशक्त शब्द है।

जब उसकी आत्मा पाप के लिए बलिदान चढ़ाती है, अपराध के लिए बलिदान चढ़ाती है, तो यीशु एक अपराध बलिदान के रूप में, एक बलिदान के रूप में मर गया। वह अपनी संतान को देखेगा। वह अपने दिनों को लम्बा करेगा।

प्रभु की इच्छा उसके हाथ में सफल होगी। पीड़ित सेवक की प्रस्तुति के बीच में, यशायाह वह भाषा देता है जो अंततः परमेश्वर के पुत्र के पुनरुत्थान और महिमा में पूरी होती है। हमारे लिए विराम लेना अच्छा है, और हमारे अगले व्याख्यान में, मैं यशायाह 53 के आश्चर्य और आशीर्वाद के बारे में अधिक विस्तार से बताऊंगा।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मसीह के उद्धार कार्य पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या दो, परिचय, भाग दो, धर्मशास्त्रीय विधि, मुख्य पुस्तकें, बाइबिल की ध्वनियाँ, यशायाह 53 है।